मसीही लोग तथा सरकार
(5:12-42)

पिछले पाठ में, हमने 5:12-42 में से प्रेरितों के दूसरी बार सताए जाने का अध्ययन किया था। जिन्होंने इसे पढ़ा, वे पूरी तरह समझ गए होंगे कि प्रेरितों को किस प्रकार की चुनौतियों का सामना करना पड़ा। कालांतर में उन्हें धमकाया और यीशु के नाम से प्रचार करने से मना भी किया जाता रहा है। कइयों को गिरफ़्तार किया गया और कई पीटे गए; और कई अपने विश्वास के कारण मौत के घाट उतार दिए गए। इनके लिए, परमेश्वर और मनुष्य की आज्ञा में से एक को चुनने का कारण बिल्कुल स्पष्ट था। तथापि, हम में से कइयों के लिए हो सकता है कि ये मामले इतने स्पष्ट न हों। ''प्रधान अधिकारियों के'' (रोमियों 13:1) साथ हमारे सम्बन्धों के बारे में आगे खोज करना लाभप्रद होगा।

आधारभूत नियम : कानून का पालन करें

हमारे अध्ययन में अब तक तीन मुख्य सिद्धांत स्थापित हुए हैं। उन पर पुन:विचार करें, उन्हें विस्तार दें, और उन्हें व्यवहार में लाएं। सिद्धांत क्रम एक यह है कि साधारण नियम के रूप में, हमें उस देश के कानून का पालन करना चाहिए, जिसमें हम रहते हैं। पूरी दुनिया में अधिकारियों का आदर करने में कमी व्यापक रूप में पाई जाती है। पुराने नियम के समयों में, जब ''जिसको जो ठीक सूझ पड़ता था वही वह करता था'' (न्यायियों 21:25), यह अव्यवस्था का शासन था।

हमें राज्य सरकार के नियमों का पालन करना चाहिए, इसलिए नहीं कि सरकार हमेशा सही ही होती है या अच्छी ही होती है। जिन अधिकारियों की बात पौलुस और पतरस ने की वह नीरो की अध्यक्षता में रोमी सरकार थी। हम देश के कानून का पालन इसलिए नहीं करते हैं कि हम उनसे सहमत होते हैं या उनका कुछ अर्थ होता है; बल्कि हम इन नियमों को इसलिए मानते हैं क्योंकि यह परमेश्वर की इच्छा है। पौलुस ने कहा कि सरकारें ''परमेश्वर की ओर से'' और सरकारी नौकर (जन सेवक) ''परमेश्वर के सेवक'' (रोमियों 13:1, 4) के रूप में काम करते हैं। पतरस ने कहा, ''*प्रभु के लिए* मनुष्यों के ठहराए हुए हर एक प्रबन्ध के आधीन में रहो, ... क्योंकि परमेश्वर की इच्छा यह है ... '' (1 पतरस 2:13, 15)।

आधारभूत अपवाद : जब कानून परमेश्वर के नियम का उल्लंघन करता हो

सिद्धांत क्रम दो इस नियम का अपवाद है, जब मनुष्य का कानून प्रत्यक्ष रूप से परमेश्वर के नियम से टकराता है। प्रेरितों 4 और 5 में, यह टकराव स्पष्ट था: लोग कहते थे, ''मसीह के नाम का प्रचार *मत करो;*'' परमेश्वर कहता था, ''मसीह के नाम का प्रचार *करो*।'' पुराने नियम में फ़िरौन ने कहा, ''लड़कों को मार देना'' (निर्गमन 1:15-22), परन्तु परमेश्वर ने कहा, ''तू खून न करना।''[1] हाल ही के दिनों में लोगों का कहना था, ''परमेश्वर की आराधना के लिए इकट्ठे मत होना,'' परन्तु परमेश्वर कहता है ''एक दूसरे के साथ इकट्ठे होना न छोड़ें, जैसे कितनों की रीति है'' (इब्रानियों 10:25)। लोग कहते हैं, ''अपने पड़ोसी को बाइबल की शिक्षा मत दो,'' परन्तु परमेश्वर कहता है ''सारी सृष्टि के लोगों को सुसमाचार का प्रचार करो'' (मरकुस 16:15)। जब टकराव इतना स्पष्ट हो तो जो कोई परमेश्वर को समर्पित है, उसके सामने कोई और विकल्प नहीं रहता। वह यह नहीं पूछ सकता ''लाज़ किसमें है ?'' या ''प्रसिद्ध कौन सा है ?'' या ''सुरक्षित कौन सा है ?'' वह यही पूछेगा कि ''सही कौन सा है ?'' और वह उसी को मानेगा।

आज संसार में, बहुत से विश्वास ''राजनीतिक दृष्टिकोण से अनुचित'' हो चुके हैं। किसी जगह, ठोकर से बचने के लिए हम लोगों के साथ मिल सकते हैं और मिलना भी चाहिए।[2] तथापि, जो कुछ ''राजनीतिक दृष्टिकोण से अनुचित'' हो, वह बाइबल के दृष्टिकोण से हमेशा अनुचित नहीं होता। उदाहरण के लिए, समलैंगिकता की निन्दा करना ''राजनीतिक दृष्टिकोण से अनुचित'' है, परन्तु बाइबल बताती है कि समलैंगिकता परमेश्वर की दृष्टि में घृणात्मक है (देखिए लैव्यव्यवस्था 18:22; 20:13; 1 कुरिन्थियों 6:9, 18)। परमेश्वर की सारी मनसा का प्रचार करने के लिए, समलैंगिकता को जो कि शरीर का काम है, नंगा करने से हमें झिझक नहीं करनी चाहिए वरना हम उसके लिए दोषी ठहरेंगे (गलतियों 5:19-21)। हमें चाहिए कि समलैंगिकों पर मन फिराने और उनके जीवन के ढंग को बदलने के लिए दबाव डालें।[3] प्रश्न यह नहीं कि ''राजनीतिक दृष्टि से ज़्या सही'' है बल्कि प्रश्न यह है कि ''परमेश्वर की दृष्टि में ज़्या सही है ?''

अन्य विषयों में, व्यज़्ति विशेष का विवेक भी उसमें आ जाता है। विवेक हमारे अन्दर पाई जाने वाली वह स्वाभाविक चेतना है जो बताती है कि कुछ काम सही हैं और कुछ गलत हैं।[4] विवेक को स्वाभाविक ही पता चल जाता है कि कौन सा काम गलत है; कई बातों में विवेक को सिखाना आवश्यक होता है। कभी-कभी, जब विवादास्पद बातें उठती हैं, जिसमें ''परमेश्वर कहता है'' की बात स्पष्ट नहीं होती हो, तो ऐसे समय में हर एक मसीही को चाहिए कि वह ध्यानपूर्वक पवित्र शास्त्र के प्रकाश में अध्ययन करे, ''और अपने ही मन में निश्चय कर ले'' (रोमियों 14:5), और फिर अपने उस विश्वास के साथ जीवन व्यतीत करे।[5] इसलिए, समय-समय पर, मसीहियों को उन ''शज़्तियों को'' यह कहना पड़ा है, ''मैं जानबूझ कर ऐसा या वैसा नहीं कर सकता,'' या ''ऐसा या वैसा करने से मेरे विवेक को ठेस पहुंचती है।''[6]

ज़्योंकि अधिकारियों का विरोध करना परमेश्वर की दृष्टि में गज़्भीर बात है, इसलिए *अपनी* नापसन्द और *परमेश्वर* की नापसन्द में अन्तर करते समय सावधानी बरतें। यदि व्यज़्तिगत तौर पर आप को कोई विशेष कानून अच्छा नहीं लगता, तो अपने घमण्ड और अकड़ को पी जाएं और उसके अनुकूल अधीनता को स्वीकार कर लें। फिर भी, यदि, आपको पूरे दिल से लगता है कि कोई विशेष कानून *परमेश्वर* की इच्छा के विरुद्ध है,तो अपनी बात पर डटे रहिए परन्तु इसका मूल्य चुकाने को भी तैयार रहें। पतरस और अन्य प्रेरितों के शज़्द अपने हृदय पर लिख लें: ''कि मनुष्यों की आज्ञा से बढ़कर परमेश्वर की आज्ञा का पालन करना ही कर्तव्य कर्म है'' (5:29) यह नहीं कि ''मान सकते हैं'' या यह कि ''मानना ठीक होगा'' बल्कि यह कि ''परमेश्वर की आज्ञा का पालन करना ही कर्तव्य कर्म है।'' बन्दीगृह में डाले जाने की धमकी मिलने पर उन्होंने उज़र दिया, ''हम परमेश्वर की ही आज्ञा का *पालन करेंगे*।'' पिटाई की धमकी मिलने पर उनका उज़र था ''हम परमेश्वर *की ही* आज्ञा का *पालन करेंगे*।'' जान से मारने की धमकी मिलने पर उनका उज़र था, ''हम परमेश्वर की ही आज्ञा का *पालन करेंगे*।''

आधारभूत सिद्धांतः हर हाल में, अधिकारियों के प्रति सज़्मान प्रकट करें

तीसरा सिद्धांत सबसे प्रमुख है और सज़्भवतः सबसे कठिन भी: हर हाल में (तब भी जब हम जानबूझ कर किसी विशेष कानून का उल्लंघन करें), सरकारी अधिकारियों के प्रति *सज़्मान व्यज़्त करें*। अध्याय 4 में पतरस और यूहन्ना सभा के सामने आदर-सहित खड़े थे। अध्याय 5 में जब अधिकारी उन्हें गिरज़्तार करने के लिए आए तो पतरस और अन्य प्रेरितों ने उनका विरोध नहीं किया; वे आदरणीय थे। पतरस ने हमें ''राजा का सज़्मान'' करने की चुनौती दी (1 पतरस 2:17)! इसका अर्थ यह हुआ कि सरकार से किसी भी विषय पर व्यवहार करते समय (किसी भी कानून में *एक* अपवाद के साथ जिसे हमारा विवेक मानने से रोकता है), हम आदर योग्य, भद्र, ईमानदारी के साथ अधीन होने वाले होंगे। यदि कोई ऐसा कानून है जिसे हम शुद्ध विवेक से मान नहीं सकते, तो यह स्पष्ट करने के लिए कि इसे ज़्यों नहीं मान सकते, हम इसकी पूरी तह तक जाएंगे, ज़्योंकि हमारी इच्छा परमेश्वर की आज्ञा का पालन करना है, विद्रोह नहीं।

संसार में, गर्भपात के सज़्बन्ध में विवाद ज़ोरों पर है।[7] मैं अपने पूरे दिल से मानता हूं कि गर्भपात से परमेश्वर की इच्छा का उल्लंघन होता है। साथ ही अमेरिका की ''द राइट टू लाइफ़'' [जीवन का अधिकार] लहर में ''मूढ़ता'' के कामों से मैं भयभीत भी हूं। एक व्यज़्ति उस डॉज़्टर को कत्ल करने के कारण सुर्खियों में था, जो गर्भपात कराने में ज़्याति प्राप्त था। एक और व्यज़्ति की गर्भपात कराने वाले ज़िलनिकों को तोड़कर उनमें घुसने और यों ही लोगों को मार देने के कारण जांच चल रही है। इन लोगों ने यह सोचा होगा कि वे परमेश्वर की इच्छा पूरी कर रहे हैं, परन्तु वास्तव में इन्होंने गर्भपात विरोधी स्थिति को

अपूर्णीय आघात पहुंचाया है। गर्भपात को समाप्त करने के उचित और अनुचित ढंग हैं;[8] उन्होंने अनुचित ढंग को अपनाया। फलस्वरूप, बहुतों के मनों में यह होगा कि गर्भपात का विरोध करने वालों के लिए वास्तविकता से अनभिज्ञ होना आवश्यक है।

इसके अलावा बहुत से लोग जो परमेश्वर के पीछे चलने का दावा करते हैं, वे भी बिना अनुशासन और बिना किसी सिद्धांत के असंतुष्ट मिलते हैं। वे अधिकारियों पर धावा बोलते हैं, सज़्पज़ि का नाश करते हैं, और विद्रोह को बढ़ावा देते हैं। फिर जब सरकार कार्यवाही करती है, तो वे स्वयं को शहीद बताते हैं। इसके विपरीत, पौलुस ने तीतुस को लिखा:

> (करेते के मसीही) लोगों को सुधि दिला, कि हाकिमों और अधिकारियों के आधीन रहें, और उनकी आज्ञा मानें, और हर एक अच्छे काम के लिए तैयार रहें, किसी को बदनाम न करें; झगड़ालू न हों; पर कोमल स्वभाव के हों, और सब मनुष्यों के साथ बड़ी नम्रता के साथ रहें (तीतुस 3:1, 2)।

पुन: प्रेरितों को और शज़्तिशाली महासभा के साथ उनके सज़्बन्ध को भी देखें। सभा के सामने, वे निर्भीक थे, परन्तु घृणात्मक नहीं। प्रचार न करने का आदेश मिलने पर, उन्होंने सभा के सदस्यों पर अभियोग चलाने की याचिका दर्ज नहीं की या कोई विरोध प्रदर्शन[9] नहीं किया और न मन्दिर को जलाने की कोशिश की। केवल उन्होंने प्रचार जारी रखा और उसके परिणाम भुगतने को वे तैयार थे।

जिस सिद्धांत की हम बात कर रहे हैं, वह अधीनता के सभी क्षेत्रों पर लागू होता है। अधीनता और अधिकार के बारे में नया नियम बहुत कुछ बताता है:[10] पत्नियां अपने पतियों के अधीन रहें (इफिसियों 5:22-24; कुलुस्सियों 3:18; 1 पतरस 3:1-6)। बच्चे अपने माता-पिता के अधीन रहें (इफिसियों 6:1-3; कुलुस्सियों 3:20)। नौकर अपने मालिक के अधीन रहें (इफिसियों 6:5-8; कुलुस्सियों 3:22-24)।[11] मसीही होने के नाते हमें अपनी मण्डली के प्राचीनों के अधीन रहना चाहिए (इब्रानियों 13:17)। हमें सभी अधिकारियों के अधीन होना चाहिए, चाहे वह मुज़्याध्यापक या अध्यापक ही ज़्यों न हों जहां हम पढ़ते हैं, या वह व्यावसायिक संगठन जिससे हम जुड़े हुए हैं (तीतुस 3:1)।

जितने भी सज़्बन्धों की सूची दी गई है, इन सब में सज़्भावना रहती है कि हमें परमेश्वर की इच्छा के विरुद्ध कार्य करने को कहा जाए। एक मसीही स्त्री को अपने जीवनसाथी के अनैतिक कार्यों में भाग लेने की मांग हो सकती है। एक बच्चा जिसके माता-पिता गैर मसीही हैं, उसे कलीसिया के किसी भी काम में दखल देने से मना किया जा सकता है। हो सकता है कि एक नियोज़्ता यह स्पष्ट करे कि यदि हम किसी अवैध काम को चुपचाप नहीं करते, तो हमें काम से निकाल दिया जाएगा। जब ऐसी परिस्थितियां पैदा हों तो, ''हमें मनुष्यों की नहीं, परमेश्वर की इच्छा पूरी करनी चाहिए।''

बाकी समय, यदि हम मसीह के लिए फल चाहते हैं तो हमें अपने कर्तव्य का पालन करते हुए आज्ञाकारी रहना चाहिए। यदि एक मसीही स्त्री अपने गैरमसीही पति की इच्छाओं की परवाह नहीं करती, तो वह यह कहकर उसे प्रभावित नहीं कर सकेगी कि,

''मैं आपके साथ मछली पकड़ने के बजाय आराधना के लिए जा रही हूं।'' पति को लगेगा कि वह यह सब उसे चिढ़ाने के लिए कर रही है। साधारणतया मसीही बच्चों को अपने गैर मसीही माता-पिता का आदर करना चाहिए वरना उनकी इच्छा के विरुद्ध आराधना में जाना उनके साथ विद्रोह का संकेत होगा। कर्मचारियों, कलीसिया के सदस्यों, स्कूल में विद्यार्थियों और व्यापारिक संगठन के सदस्यों के लिए एक ही नियम लागू होगा।

यदि हम प्रभु के लिए सकारात्मक प्रभाव देना चाहते हैं, तो हमें हर बात में विनम्रतापूर्वक आज्ञाकारी होना चाहिए यदि वह परमेश्वर की प्रकट इच्छा के विरुद्ध न हो!

सारांश

अन्त में, मैं आपको, 5:29 में पतरस और अन्य प्रेरितों के शब्दों के द्वारा इस अध्ययन के सार की ओर ले जाना चाहता हूं: हमारे लिए ''मनुष्यों की आज्ञा से बढ़कर परमेश्वर की आज्ञा का पालन करना ही कर्तव्य कर्म है।''

कलीसिया के आरम्भिक दिनों में कुछ सदस्य तरतुलियन नाम के एक अगुवे के सामने मसीही बनने के कारण उन पर पड़ने वाले दबाव की शिकायत कर रहे थे। ''यदि हम अधिकारियों की न मानें,'' उनका कहना था, ''तो हमारी नौकरियां छूटती हैं या हमें अपनी जान से हाथ धोने पड़ सकते हैं। निस्संदेह परमेश्वर ऐसा नहीं चाहता। आखिर हम और हमारे परिवार ज़िन्दा रहना चाहते हैं।'' तरतुलियन ने एक पल के लिए उनकी ओर देखा और कहा, ''हम ज़िन्दा *रहेंगे*?''

हमने अपने जीवनों में बहुत से ''चाहिए'' शामिल कर लिए हैं: हमारे पास कुछ सम्पत्तियां होनी चाहिए, हमें सफल होना चाहिए, हम प्रसन्न रहना चाहते हैं, और न जाने क्या-क्या। वास्तव में, जीवन में कुछेक ही सचमुच ''चाहिए'' हैं, जो मिल पाते हैं, परन्तु इनमें से एक आवश्यक यह है कि: ''हमें परमेश्वर की आज्ञा माननी *चाहिए*।''

पादटिप्पणियां

[1]निर्गमन 20:13. निस्संदेह, हत्या से दस आज्ञाओं के दिये जाने से बहुत पहले ही परमेश्वर की इच्छा का उल्लंघन हुआ (उत्पत्ति 4:8-15)। [2]सिद्धांत यह है कि ''किसी न किसी रीति से कइयों का उद्धार'' हो (ध्यान दें 1 कुरिन्थियों 9:22)। उदाहरण के लिए, स्पेनी भाषा बोलने वाले अपने आप को स्पेनी कहलाना पसन्द करते हैं, हमें उसी शब्द का प्रयोग करना चाहिए। [3]मेरे कहने का अर्थ यह नहीं कि लगातार इसी पर, या किसी अन्य विषय पर प्रचार करना किसी का शौक बन जाए। मेरा भाव है कि जब हम लैंगिक पाप पर प्रचार करते हैं, तो हमें समलैंगिक कामुकता को शामिल करने में हिचकिचाना नहीं चाहिए। [4]पिछले पाठ के अन्त में ''विवेक'' पर अतिरिक्त लेख देखिए। [5]रोमियों 14 भी स्पष्ट करती है कि न्याय की ऐसी बातों में हमें अपने उस भाई की निंदा नहीं करनी चाहिए जो हम से असहमत हो। ध्यान दें कि ये न्याय के विषय हैं, विश्वास के नहीं (अर्थात जिन बातों पर परमेश्वर ने अपनी इच्छा स्पष्ट प्रकट कर दी है)। [6]युद्ध में जाना इसका एक उदाहरण है। कुछ मसीही ''आपत्ति करने वाले ईमानदार'' बन गए हैं, इनमें से कुछ ने सेना के मेडिकल कोरप्स या युद्ध में भाग न लेने वाली किसी कोरप्स में सेवा की। ऐसे देशों में जहां इस प्रकार की

सरकार है, कानून कहता है कि किसी के साथ ज़ी उसके विवेक के विरुद्ध ज़बरदस्ती नहीं की जा सकती। तब भी जब कानून उस सुरक्षा का वायदा करता है, किसी सरकार के आदेश को मानने से इन्कार के परिणाम भुगतने पड़ सकते हैं। [7]आप अपने देश और क्षेत्र के अनुसार इस उदाहरण का प्रयोग कर सकते हैं। आपके क्षेत्र में भी ऐसी कोई लहर हो सकती है, जिसके प्रभाव की इसकी ''मूढ़ता'' के कारण बदनामी हुई हो। [8]शिक्षा, कानून, और व्यवहार्य बदल हो सकते हैं। [9]प्रदर्शनों की समस्या यह नहीं है कि उसमें धर्मशास्त्र को प्राथमिकता मिलती है या नहीं। यदि प्रदर्शन वैध और सज्य है, तो मसीही लोग उसमें भाग ले सकते हैं। तथापि, प्रेरितों ने, ऐसा कुछ भी नहीं किया। स्पष्टतया, उन्होंने सोचा कि आत्माओं को बचाना अधिकारियों पर दबाव डालने से कहीं ज़रूरी था। बुरे नेतृत्व वाले देशों में रहने वाले लोग स्वर्ग में जा सकते हैं; मसीह के बिना वे स्वर्ग में नहीं जा सकते। [10]अधीनता पर बाइबल की शिक्षा मात्र अधिकारियों की अधीनता से बहुत विशाल है (ध्यान दें इफिसियों 5:21), परन्तु जिस विषय पर हम बात कर रहे हैं, वह अधिकारियों की अधीनता है। [11]ये आयतें विशेष रूप से ग़ुलाम के अपने स्वामी के अधीन रहने की बात करती हैं, परन्तु सामान्यत: इसे नियोज्ता-कर्मचारी के सज़्बन्ध में लागू किया जा सकता है।

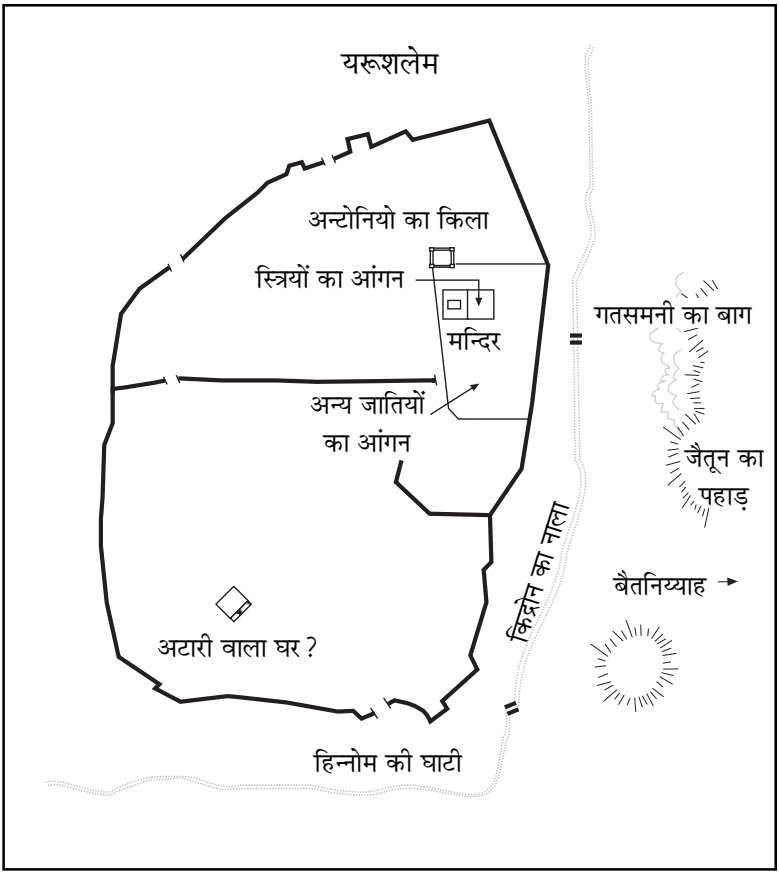

यरूशलेम का एक मानचित्र